

श्रीदेवास महिला महाविद्यालय, सासाराम  
अध्ययन सामग्री : संस्कृत  
स्नातक मार्ग - 2, पत्र-3  
शिवराजविजय

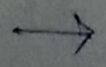
डॉ. सावित्री सिंह,  
 एसोसिएट प्रोफेसर,  
 संस्कृत विभाग.

"तज्माल!" शिवराजविजय के आधाएपट सुभेदिम को वर्णन "

महाकावि आग्निवाक्यतं व्यास ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास शिवराजविजय का प्रारंभ ही सुभेदिम की छुषमा के वर्णन के साथ किया है।

अरण एष प्रभाशः पूर्वस्थां भगवतो भरीचिभालिनः। एष  
 भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती स्वेचर-चक्रस्य,  
 कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेक्षानुपुण्डवी-  
 कपटलस्य, शोकविमोहः कोकलोकस्य, अवलम्बो शैलभ्रमक-  
 भवस्य, सूत्रधारः सर्वभ्रमहारस्य, इत्येव दिनस्य। अयमेव  
 अक्षोरान् जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भोगेषु विभनति,  
 अयमेव कारणं षण्णामृतनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उतरं दक्षिणं  
 चायनम्, एतेनैव सम्पादितं युगभेदाः, एतेनैव कृताः कल्प-  
 भेदाः, एतेमेवाऽऽश्रित्य भवति परमोद्धवः परार्द्धसङ्क्राम, असावेव  
 चर्कति वर्कति जर्हति च जगत, वेदा एतस्यैव वादिनाः,  
 गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मविद्या ब्राह्मणा अमुमेवाह-  
 ह्यवाविच्छते। धन्य एष कुलमूलं श्रीराम-चन्द्रस्य, प्रणमन्  
 एष विश्वैषामि' ति उद्वेजन्तं भास्वनं प्रणमन् निजपर्ण-  
 कुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुणितेवपटुविप्रवृद्धः।

पूर्व दिशा में भगवान् सुभेदिम का शक्ति-  
 प्रकाश है। यह भगवान् भास्वत भगनमण्डल के मणि,  
 नक्षत्र समुदाय के चक्रवर्ती नृपति, पुरन्दर दिशा प्राची  
 रूपी नागिका के कुण्डल, ब्रह्माण्डरूपी भवन के प्रकाशक,





कमल समूह के आतिथ्य प्रिय, - नकुवाकवात के शोक का  
 अपसारण करने वाले, डिरेफ समूह के अज्ञान, निखिल  
 व्यवहार के प्रवर्तक और दिवस के स्वामी ही भगवान  
 दिन और रात के जनक हैं। ये ही वर्ष को बारह भागों  
 में विभक्त करते हैं। वसन्तादि षड् ऋतुओं के प्रतीकात्मक  
 ऋतु हैं ये ही उत्तरायण और दक्षिणायन एवं धूम्रमार्ग का  
 अवलम्बन करते हैं। इन्होंने ही न्यदुष्टिगो (सत्ययुग, त्रेधा  
 आपर और कलि युग) का विभेद सम्पादित किया है। इन्होंने  
 ही कल्पों का विभाजन किया है। इन्हीं का आधार ऋतु  
 काल विधाता की अतिमा पराई सैल्य पूर्णता को प्राप्त  
 करती है। ये ही भगवान् अशेष संसार को पुनः पुनः  
 सृजन, पालन और संहार करते हैं। वेद इन्हीं की हृति  
 करते हैं। गायत्री देवी इन्हीं का गान करती है। अक्षयिणी  
 प्रायण प्रतिदिन इन्हीं की अर्चना करते हैं। श्रीरामचन्द्र  
 के कुल के मूल ये भगवान् स्वर्ण धाम हैं। ये समस्त जन्तु  
 के लिए वरगीण हैं।

इमशान